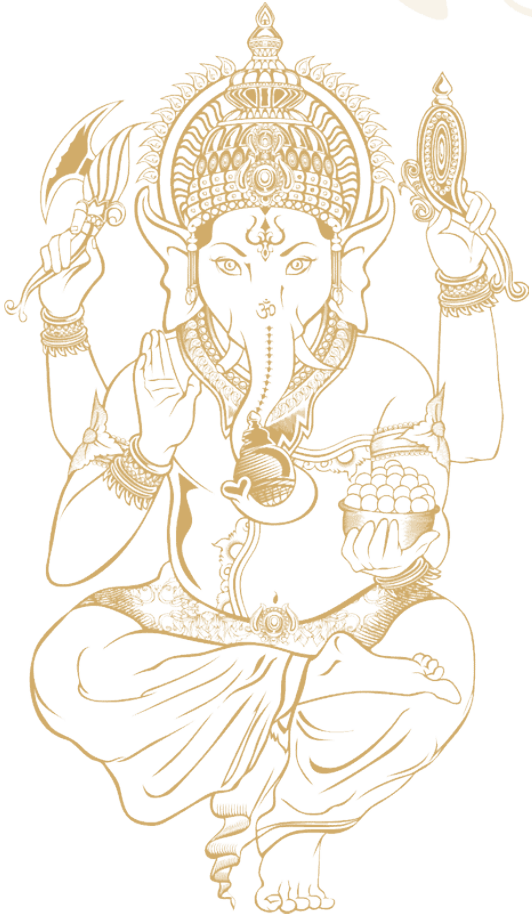

Mr.

18 Sep 2025

08:19 AM

Jammu

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119509001

तिथि 18/09/2025 **समय** 08:19:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Jammu **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:02
अक्षांश 32:42:00 उत्तर **रेखांश** 74:52:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:30:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	07:37:36 घं
वेलान्तर	00:05:51 घं
सूर्योदय	06:16:08 घं
सूर्यास्त	18:32:33 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	आश्विन
पक्ष	कृष्ण
तिथि	12
नक्षत्र	आश्लेषा
योग	शिव
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मार्जार
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
वर्ग	श्वान
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	डी-डीगेश्वर
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	सूर्य
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

बुध 15वर्ष 9मा 3दि

बुध	
18/09/2025	
22/06/2041	
बुध	18/11/2026
केतु	15/11/2027
शुक्र	15/09/2030
सूर्य	23/07/2031
चन्द्र	21/12/2032
मंगल	18/12/2033
राहु	07/07/2036
गुरु	12/10/2038
शनि	22/06/2041

योगिनी

भ्रामरी 3वर्ष 8मा 15दि

भ्रामरी	
18/09/2025	
03/06/2029	
भ्रामरी	12/11/2025
भद्रिका	03/06/2026
उल्का	02/02/2027
सिद्धा	13/11/2027
संकटा	03/10/2028
मंगला	12/11/2028
पिंगला	01/02/2029
धान्या	03/06/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			26:31:28	कन्या	चित्रा	1	मंगल	गुरु	---	0:00			
सूर्य			01:14:29	कन्या	उ०फाल्गुनी	2	सूर्य	गुरु	सम राशि	1.51	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			17:38:26	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	बुध	स्वराशि	1.02	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल			02:57:45	तुला	चित्रा	3	मंगल	शुक्र	सम राशि	1.25	ज्ञाति	भ्रातृ	साधक
बुध		अ	05:14:24	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	बुध	उच्च राशि	1.36	भ्रातृ	ज्ञाति	क्षेम
गुरु			26:29:17	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.37	आत्मा	धन	मित्र
शुक्र			04:03:43	सिंह	मघा	2	केतु	चंद्र	शत्रु राशि	0.96	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		04:32:04	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	शनि	सम राशि	1.15	मातृ	आयु	अतिमित्र
राहु			24:07:56	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु			24:07:56	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	विपत

लग्न-चलित

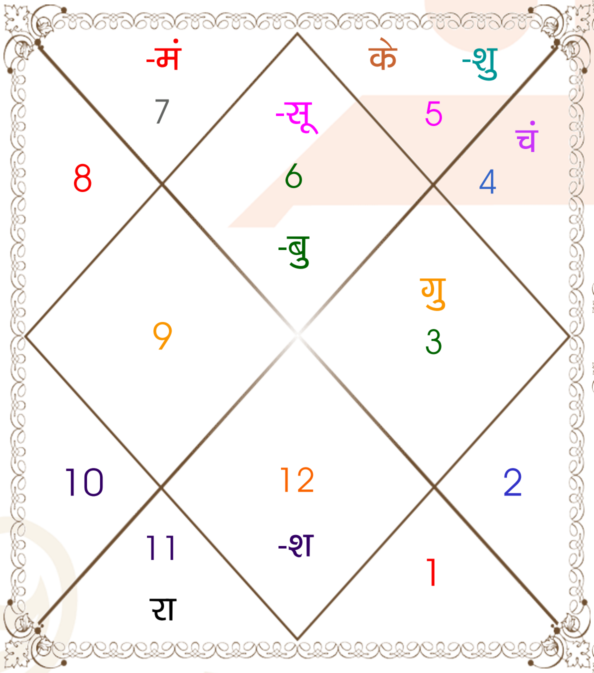

चन्द्र कुंडली

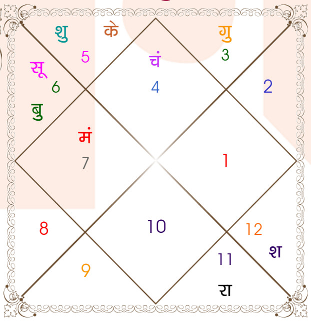

नवमांश कुंडली

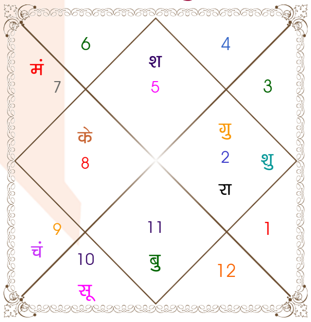

सर्वाष्टकवर्ग

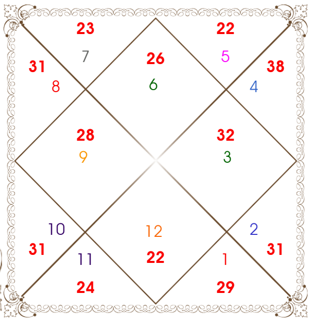

दशमांश कुंडली

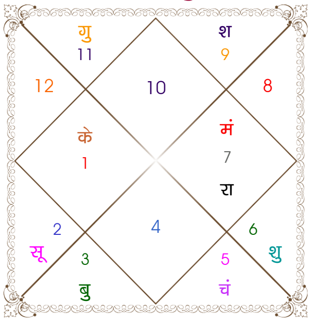

FUTUREPOINT Astro Solutions
एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्मराशि कर्क तथा राशि स्वामी चन्द्रमा होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका गण राक्षस, योनि मार्जार, नाड़ी अन्त्य, वर्ण विप्र तथा वर्ग श्वान होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपका जन्म नाम "डि" या "डी" अक्षर से प्रारम्भ होगा।

आश्लेषा नक्षत्र की गणना गण्डमूल नक्षत्रों के अर्न्तगत की जाती हैं। यद्यपि प्रथम चरण के जातक को इसका दोष अल्प मात्रा में होता हैं तथापि जन्म समय में इसकी शान्ति अवश्य करवानी चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के 28000 जप करने चाहिए तथा 28वें दिन शान्ति के लिए दशांश का हवन करना चाहिए इससे इसका दोष कम होगा तथा शुभ फल प्राप्त होंगे। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न किया जाना चाहिए।

मंत्र - ऊँ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

अर्थात आश्लेषा नक्षत्र में पैदा हुआ मनुष्य स्वस्थ शरीर वाला, माता पिता का भक्त, अपने धर्म में आस्था रखने वाला, नम्र, लोक में मान्य तथा धनवाहन आदि के सुख से परिपूर्ण होता है।

आप यात्राओं तथा भ्रमण में अपने अधिकांश समय को व्यतीत करेंगे। आपके स्वभाव में यदा कदा दुष्टता का प्रादुर्भाव होगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रायः दुःखी रहेंगे। आपके पास धन का अभाव नहीं रहेगा परन्तु अपने अर्जित धन को भी आप शीघ्र व्यय करेंगे।साथ ही विलासिता की अधिकता भी आप में रहेगी।

वृथाटनः स्यादितिदुष्टचेष्टः कष्टप्रदाश्चापि वृथा जनानाम्।
सर्पि सदर्थोहि वृथार्पितार्थः कन्दर्पसंतप्तमना मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र में उत्पन्न जातक व्यर्थ घूमने वाला, दुष्ट प्रकृति से लोगों को कष्ट देने वाला, अपने उत्तम धन को वुरे कर्मो में खर्च करने वाला, विलासी तथा कामातुर रहता है।

अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आप शीघ्र आकर्षित होंगे। आपका शारीरिक स्वास्थय मध्यम रहेगा। आप अन्य जनों द्वारा उपकृत होने पर भी उनके उपकार को अल्प मात्रा में स्वीकार करेंगे। साथ ही आप किये हुए कार्यो की पुनरावृति करने वाले भी होंगे।

लुब्धः खत्रजः कृशाङ्गश्च पुनः पुनः।
आश्लेषायां समुद्भूतः कृतकर्मा भविष्यति।।
जातक दीपिका

अर्थात आश्लेषा में जन्मा मनुष्य लोभी, लंगङा, कमजोर शरीर वाला, कृतघ्न तथा किये गये कार्यों को करने वाला होता है।

आप भक्ष्य तथा अभक्ष्य पदार्थो का भेद कम ही करेंगे तथा शाकाहारी व मांसाहारी दोनो प्रकार के भोजनों का भक्षण करेंगे। आपके कार्य कठोर होंगे जिससे अन्य सामाजिक जनों को भी कभी कभी असुविधा का सामना करना पड़ेगा अच्छे कठोर कार्य जीवन में अवसरानुकूल करते रहैंगे।

सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः।
आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते।।
मानसागरी

अर्थात आश्लेषा में पैदा हुआ बालक सर्वभक्षी, कार्यकर्ता, कृतघ्न, ठग, दुर्जन तथा किये हुए कार्यो को करने वाला होता है।

आपकी बुद्धि मध्यम होगी तथा आप कृतज्ञता से युक्त शब्दों का प्रयोग करेंगे। साथ ही आपके स्वभाव में यदा कदा क्रोध की भी अधिकता रहेगी। आप का आचरण भी मध्यम रहेगा तथा समाज में आपको मान सम्मान तथा सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सार्पे मूढ़मतिः कृतघ्नवचनः पापी दुराचार वान।
जातक परिजातः

अर्थात् आश्लेषा में उत्पन्न जातक मूढ़मति कृतघ्नतापूर्ण वाणी बोलने वाला, क्रोधी तथा दुराचारी होता है।

आप स्वर्ण पाद में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने के कारण जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। इस से उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा प्रायः धनाभाव से भी दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में सुख संसाधनों से भी हीन रहता है तथा सांसारिक कार्यों में अल्प मात्रा में सफलता प्राप्त होती है जिससे मन में तनाव आदि विद्य मान रहता है। इसके अतिरिक्त जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्यधिक परिश्रम के द्वारा अल्प सफलता अर्जित होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद अधिकांश शुभ फल ही प्रदान करेगा। अतः आप जीवन में समस्त सुख संसाधनों वैभव ऐश्वर्य एवं धनादि से सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में पर्याप्त मात्रा में धनार्जन करके समाज में एक धनाढ्य पुरुष के रूप में प्रख्यात रहेंगे। समाज में आप एक सम्माननीय व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही वाहनादि सुखों से भी आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप सद्गुणों से सर्वथा सम्पन्न रहेंगे। आपकी पत्नी भी सुन्दर सुशील एवं गुणवान होगी तथा आपके सेवकगण भी ईमानदार रहेंगे। साथ ही आप के लाभ मार्ग भी हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आप दीर्घायु होंगे एवं शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेंगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि का भी आप पूर्ण रूप से सुख प्राप्त करेंगे।

कर्क राशि में पैदा होने के कारण आपका स्वास्थय मध्यम रहेगा आपक समस्त कार्य निपुणता से सम्पन्न होंगे तथा जीवन पर्यन्त विपुल धन के स्वामी बनकर समाज में धनाढ्य कहलाएंगे। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। आपकी धार्मिकता से परिपूर्ण भावनाएं रहेंगी तथा इसका आप यत्नपूर्वक पालन भी करेंगे। विद्वानों तथा गुरूजनों के आप हमेशा प्रिय रहेंगे तथा इनसे आपको पूर्ण स्नेह तथा आशीर्वाद मिलता रहेगा। आपकी बुद्धि भी अत्यन्त तीव्र होगी जिससे सब लोग आपसे प्रभावित होंगे। क्रोध की बहुलता भी आप में रहेगी तथा यदा कदा आप अत्यन्त ही दुःख का भी अनुभव करेंगे। आप अच्छे मित्रों के मित्र होंगे। साथ ही अन्य कार्यों तथा कलाओं का भी आपको ज्ञान रहेगा। शारीरिक बल आपका मध्यम रहेगा तथा अपने घर से आप अन्यत्र स्थाई या अस्थाई रूप से निवास कर सकते हैं।

कार्यकारी धनीशूरो धर्मिष्ठो गुरूवत्सलः।
शिरो रोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्यवित्तमः।।
प्रवासशीलः कोपाढ्योडबलो दुःखी सुमित्रकः।
अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप वात तथा कफ मिश्रित प्रकृति से युक्त रहेंगे। आप का रूप अत्यन्त सुन्दर आकर्षक तथा तेजस्वी होगा। आप स्वयं उपार्जित धन से धनवान बनेंगे। ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति आपके मन में श्रद्धाभाव व्याप्त रहेगा। श्रेष्ठकुल में उत्पन्न लोगों की सेवा तथा उन्हें सहयोग प्रदान करने में आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

पवनकफशरीरो देव संकाश रूपः।
स्वयमुपचित्तवित्तो देवताविप्रभक्तः।।
कुलजन परिसेवी मण्डलाकार मध्ये।
भवति विपुलवित्तः कर्कटौ यस्यराशिः।।
जातक दीपिका

वेदादिशास्त्रों के अध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञान प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य कलाओं के विषय में भी आप जानकारी रखेंगे। आपका चाल चलन श्रेष्ठ होगा तथा सभी लोग आपकी प्रशंसा करेंगे। पुष्पों की सुगन्ध तथा जल में क्रीड़ा करना आपको अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। साथ ही सम्पूर्ण समाज में आप विख्यात एवं कीर्तिवान रहेंगे।

श्रुतकलाबलनिर्मलवृतयः कुसुमगंध जलाशयकेलयः।
किल नरास्तु कुलीरगते विधौ वसुमतीसुमती स्मितलब्धयः।
जातकाभरणम्

आपका कण्ठ भाग स्थूल रहेगा तथा स्त्रीवर्ग के आप पूर्ण रूपेण वश में रहेंगे। आपके बहुत से मित्र होंगे जो अच्छे तथा सद्गुणों से युक्त रहेंगे। जल विहार से आपको

आनन्दानुभूति होगी। आप बहुत से भवनों के निर्माता होंगे या आप बहुत से मकानों के स्वामी भी हो सकते हैं। आपका कद मध्यम रहेगा तथा वक्रगति से शीघ्र चलना आपको अच्छा लगेगा। साथ ही संतति संख्या में पुत्रों की संख्या अल्प ही रहेगी।

स्त्रीनिर्जितः पीनगलः सन्मित्रो वहवालयास्तुकट्र्धिनाढ्यः।
ह्रस्वश्च वक्रो द्रुतगः कुलीरे मेधान्वितस्तोयरतोळल्प पुत्रः।।
फल दीपिका

आप अपने जीवन में नाना प्रकार के द्रव्यों तथा सम्पतियों को प्राप्त करने में समर्थ सिद्ध होंगे। साथ ही आप ज्योतिष शास्त्र के प्रेमी तथा ज्ञाता भी होंगे। आपके सम्पूर्ण जीवन में उतार चढाव आते रहेंगे। जिस प्रकार चन्द्रमा की कलाएं क्षय और वृद्धि को प्राप्त होती हैं उसी प्रकार आप भी अपने जीवन में संघर्ष करने में रत रहेंगे। आप स्नेहाभिभूत होकर वश में किये जा सकते हैं। दबाव या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकता है चाहे वह अत्यन्त महत्वपूर्ण ही क्यों न हो। मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर की भावना रहेगी अतः आप मित्र मंडली के प्रिय रहेंगे। आप जीवपालन, उद्यान तथा जलाशयादि के निर्माण में भी हमेशा रूचिशील रहेंगे।

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्।
देवज्ञा प्रचुरालयः क्षयधनैः सयुंज्यतेः चन्द्रवत्।।
हृस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृदवत्सलः।
तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहितै जातः शशाळङकैः नरः।।
बृहज्जातकम्

आप सौभाग्य शाली पुरूष होंगे तथा अपने भाग्यबल से अधिकांश कार्यो में सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप समस्त कार्यो को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। गृहसुख से आप सुशोभित रहेंगे एवं आपका अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में व्यतीत होगा। समाज में आपका व्यवहार विनयशील रहेगा। तथा कृतज्ञता के सद्‌गुण से भी आप सुसम्पन्न रहेंगे। आप किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित करने में समर्थ हो सकते हैं। आप हमेशा सत्य तथा प्रिय वचनों को बोलने के लिए यत्नशील रहेंगे।

युक्तः सौभाग्ययोग्यैगृह सुहृदरटन ज्यौतिषज्ञान शीलैः।
कामासक्तकृतज्ञः क्षितीपतिसचिवः सत्प्रमाण प्रवासी।।
सोन्मादः केशकल्पो जलकुसुमरूचि र्हानिवृद्धयानुयातः।
प्रासादोद्यानवाणीप्रियकरणरतः पीनकण्ठः कुलीरे।।
सारावली

आप राक्षस गण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आप कभी कभी व्यर्थ की बातें बोलने वाले होंगे। साथ ही आपके हृदय में करूणा का भाव भी अल्प ही रहेगा। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही उत्तेजित होने वाले होंगे तथा क्रोध भी करेंगे। अपनी कार्य सिद्धि के लिए आप किसी भी कार्य करने के लिए तत्पर रहेंगे।

शारीरिक बल की अधिकता आप में विद्यमान रहेगी तथा बात बात पर प्रत्येक से वाद विवाद करेंगे। अतः सयंम पूर्वक अन्य लोगों से मधुर व्यवहार करना चाहिए।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। आपका चेहरा देखने में दीघाकार होगा एवं अपने संभाषण में कभी कभी आप कठोर शब्दों का प्रयोग करेंगे अतः यत्नपूर्वक मधुर एवँ सरल शब्दों का उपयोग करना आपके लिए अच्छा रहेगा।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मार्जार योनि में उत्पन्न होने के कारण वीरता का गुण स्वभाव से ही आप में विद्य मान रहेगा तथा आपके समस्त कार्य चतुराई से सम्पन्न होंगे। मधुर भोजन तथा मधुर पेय आपके मनपसन्द होंगे तथा इनके सेवन से आप पूर्ण आनन्द की प्राप्ति करेंगे। भय का आप में सर्वथा अभाव रहेगा तथा निर्भय होकर अपने जीवन के कार्य कलापों को सुसम्पन्न करेंगे। दुष्टता का समावेश भी यदा कदा आपके स्वभाव में परिलक्षित होगा। फलतः कठोर कर्मों की ओर भी आपकी प्रवृति जागृत रहेगी।

शूरः स्वकार्येदक्षश्च मिष्ठानपान भक्षकः।
निर्भयो दुस्वभावश्च नरो मार्जार योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मार्जार योनि में उत्पन्न बालक वीर, अपने कार्यो को निपुणता से करने वाला, मिष्ठानपान भक्षण प्रेमी तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में है। अतः माता के आप सदैव प्रिय रहेंगे एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण वात्सल्य तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहेंगे। जीवन में आपकी उन्नति एवं समृद्धि के लिए सदैव आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करती रहेंगी। साथ ही उन्हीं के सहयोग से आप अपने आय साधनों की वृद्धि करने में सफल हो सकेंगे। इस प्रकार जीवन के समस्त महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आपको नित्य धन लाभ होता रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करना एवं उनकी सेवा करना आप अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध अत्यन्त ही स्नेहपूर्ण रहेंगे एवं उनमें मतभेदों का प्रायः अभाव ही रहेगा। इस प्रकार आप परस्पर एक दूसरे के लिए शुभ रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा

उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रूग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए पौष मास, द्वितीया, सप्तमी तथा द्वादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की, अनुराधा नक्षत्र, व्याघातयोग, नागकरण, बुधवार, तृतीय प्रहर तथा सिंह राशि का चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 दिसम्बर से 14 जनवरी के मध्य 2,7,12 तिथियों तथा उपरोक्त योगो में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण तथा शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट शंकर भगवान को नित्य शिवालय जाकर विल्वपत्र चढ़ाने चाहिए तथा पूजार्चन करना चाहिए। साथ ही सोमवार के उपवास भी रखने चाहिए एवं सफेद मोती, सफेद वस्त्र, चावल इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धा से दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 10000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी।

ॐ श्रां श्रीं श्रों सः चन्द्रमसे नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।